

पद १७७

(राग: पिलु - ताल: लंगडी)

हाय गफलत में हूँ मैं कैसा मुझे मैं भूल गया हूँ। ख्वाहिशें दिल की
मिटाने हरसू दौड़ रहा हूँ॥ध्रु.॥ शाह वज़ीर है दिल मैं हूँ मालिक
दिल का। दिल से ही दीन दुनिया ताबे दिल के हुआ हूँ॥१॥
हुबाब नूर है दिल, मैं हूँ दरयाएजलाल। मौज दरया का तमाशा मैं
खुदी को खो दिया हूँ॥२॥ आंखों में नूर मुहम्मद दिल तो है खाने
खुदा। मैंपने का ढंग मचा के मन्नते माँग रहा हूँ॥३॥ खुल गया
चश्म हकीकी कल्मे गय्यब को समझा। लाइलाह इल्लिहा मे

खुदबखुद फना हुआ हूँ॥४॥ मैं न हिंदू न मुसलमाँ हूँ मैं मानिक
का प्यारा। मजहबे सूफी का बया कोई कहा न मैं कहा हूँ॥५॥